अच्छे फसल उत्पादन के बावजूद कम दाम

किसानों पर भी दिखी कोरोना की मार

आज चारों ओर बस एक ही चर्चा है - कोरोना की। हम सब पर किसी ना किसी तरह से इसका असर पड़ रहा है, लेकिन इस कठिन समय में भी कुछ लोग है, जो हमारी ढाल बन कर खड़े है जैसे डॉक्टर, सफाई कर्मचारी, पुलिस कर्मी और नर्स आदि। ये लोग इस वैश्विक आपदा में अपनी जान की परवाह किए बिना लोगों की सेवा में दिन-रात लगे है। हमारे किसान भी इन योधाओं से किसी भी तरह कम नहीं है। ये हमारे लिए आनाज पैदा करता है और इस कठिन समय में किसानों ने देश के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। खेती किसानी के कामकाज तालाबंदी में भी नहीं रुके।

जिंदगी कभी नहीं रूकती और सभी काम सुचारू रूप से चलते रहे, इसके लिए ज़रुरी है कि हमें समय पर खाना मिलता रहे। वो कहते है ना कि "भूखे भजन न होये गोपाला, ले लो अपनी कंठी माला"... हम सभी को एक चीज़ समान बनाती है, वो है भोजन। चाहे अमीर हो या कोई निर्धन सभी आनाज ही खाते है। रोटी हो या पिज्जा, दाल चूरमा हो या पास्ता, सभी आनाज से ही बनते है, तो जो आनाज पैदा करता है, वो तो अन्नदाता हुआ। इस कठिन समय में हमारे देश के किसानों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। खेती किसानी के कामकाज तालाबंदी में भी नहीं रूके।

देश में जिस समय तालाबंदी हुई, उस समय किसान की फसल पक कर कटने के लिए तैयार खड़ी थी। किसानों ने तो अपना फर्ज़ निभाया, लेकिन इस लॉकडाऊन की वजह से किसानों को भारी मात्रा में नुकसान उठाना पड़ा।

फसल उत्पादन अच्छा होते हुए भी किसानों को मुनाफा नहीं, बल्कि घाटा हुआ। किसान की तो सारी पूंजी उसकी फसल में लगी होती है। इसलिए किसान चाह कर भी अपनी फसल को रोक कर नहीं रख सकता है। अचानक हुए इस लॉकडाऊन की वजह से वे अपना माल मंडियों तक नहीं पहुंचा पाए। हालांकि सरकार ने फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य तैय किए है, लेकिन उसकी प्रक्रिया में समय लगता है। कई बार तो किसानों के पास फसल बेचने का मैसेज ही नहीं आ पाता।

अलवर के गांव बुजाका के रहने वाले उमरदीन साहब कहते है कि हमारी लागत बढ़ गई, कटाई के लिए जहां मज़दूर जो 2000 रुपए प्रति बीघा के हिसाब से मिल जाते थे, वो इस बार 4000 रुपए प्रति बीघा के हिसाब से मिले। घर खर्च के लिए मज़बूरी में से पुच्छल्ले (छोटे व्यापारी) को औने-पौने दामों पर अपनी फसल को बेचना पड़ा। इस बार मुझे सरसों और गेहूं में 25 से 30 प्रतिशत का नुकसान हुआ है। गेहूं का सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य 1900 रुपए प्रति क्विंटल है और हमारा गेहूं इस बार 1700 रुपए प्रति क्विंटल गया और सरसों 2700-2800 रुपए प्रति क्विंटल तक गई, जबकि समर्थन मूल्य लगभग 4400 रुपए प्रति क्विंटल है।

वहीं अगर मै सब्ज़ियों की बात करूँ, तो सब्ज़ियों में मुनाफा तो दूर की बात है। किसान की लागत ही नहीं निकल पाई। सब्ज़ियों को तो दो-तीन दिन से ज्यादा बिना तोड़े रह ही नहीं सकते, नहीं तो सब्ज़ी खेतों में ही खराब हो जाएगी। इस बार सब्ज़ी भी मंडियों तक नहीं पहुंच पाई। इसलिए फेरी वाले घर से ही मनमाने दामों में सब्ज़ी खरीद ले जाते और किसानों को मज़बूरी में बेचने पड़ी। भिंडी जो शुरूआत में 80 रुपए किलो बिका करती थी, वो इस बार लॉकडाऊन की वजह से 8-10 रुपए किलो तक बिकी।

अनुराधा दुबे
सहगल फाउंडेशन

मुबारिकपुर गांव के रहने वाले गुरनाम सिंह कहते है कि इस बार मेरी फसल की पैदावार तो अच्छी हुई, लेकिन फिर भी हमें मुनाफा उत्पादन के हिसाब से नहीं मिल पाया। हमारे यहां बाहर से मज़दूर आते थे, फसल कटाई के लिए। इससे हमें फायदा हो जाता था। इस बार कोरोना वायरस की वजह से वो नहीं आ पाए, तो हमें मज़दूर महंगे मिले और जो मिले उनको व्यवस्थित दूर-दूर बिठा कर कटाई करवाना हाथ धोने की व्यवस्था करनी पड़ी ताकि सभी इस बीमारी से बचे रहें। हमारी फसल का तो कोई मोल नहीं मिला, लेकिन लॉकडाऊन के दौरान हमें राशन ज़रुर महंगा मिला।

और अब जब किसान को खरीफ की फसल की बुवाई करनी है, तो बीज और खाद भी पहले की तुलना में महंगा मिल रहा रहा है। दुकानदार कहते है कि हमारे पास यही बचा है, लेना हो तो लो नहीं तो मत लो। अब ऐसे में किसान क्या कर सकते है। किसान तो बिना खेती के अपने घर को नहीं चला सकते है। इसलिए इस मुश्किल घड़ी में भी अपना काम कर रहे है। ये सब इतने जल्दी ठीक नहीं होने वाला, इसलिए किसान भी कोरोना के साथ जीने की आदत डाल रहे है।

मुबारिकपुर के ही रहने वाले कुलवंत सिंह की बात भी इन अनुभवों से जुदा नहीं है। उनका कहना है कि, "हमारे कस्बे में एक कोरोना का मरीज निकला था, जिस वजह से पूरे कस्बे में कर्फ्यू लग गया था। फिर यहां थोड़ी दिक्कतें हुईं, हम लोगों को राशन पानी की और खरीफ की फसल बुवाई के लिए खाद बीज की भी दिक्कतें हुईं। बीज मार्केट में मिल नहीं रहे थे और यदि मिलते थे, तो दुकानदार सप्लाई की कमी बता कर मनमाने पैसे वसूल कर रहे थे, तो इस तरह इस बार हमें नुकसान झेलना पड़ रहा है।"

कुलवंत सिंह की पत्नी जसविंदर जी से बात की तो उन्होंने कहा कि, "देखो जी इस लॉकडाऊन की वजह से इस बार फसल का मूल्य सही नहीं मिला, क्योंकि हम सब साथ में ही खेतीबाड़ी का काम करते है लेकिन फिर भी कहीं ना कहीं तसल्ली थी कि इस मुश्किल घड़ी में हम सब पूरा परिवार एक साथ रहें। बच्चे आंखों के सामने रहते है, तो मन को सुकून मिलता है। रहते तो हम पहले भी घर में ही थे और अब भी घर में ही रहते है। काम भी वहीं करने है, जो पहले करते थे, न्यार फुस और खेतीबाड़ी का काम तो हम पहले जैसे ही कर रहे है।"

किसानों की इन समस्याओं की बात जब अलवर जिले के उप-रजिस्टरार राकेश दत्त भरद्वाज से की, तो उन्होंने हमें बताया कि केन्द्र सरकार द्वारा हर वर्ष न्यूनतम समर्थन मूल्य पर किसानों की फसल खरीदी जाती है। पंचायत समिति स्तर, उपखंड स्तर और जिला स्तर पर खरीदी केन्द्र बनाए जाते है, जहां पर किसान अपनी फसल को बेच सकें। सरकार ने फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य तैय कर रखे है, जिसमें गेहूं का समर्थन मूल्य 1925 रुपए, सरसों का 4425 रुपए और चने का 4875 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से तैय किए गए है, जिसके लिए किसान ई-मित्र पर जाकर अपना पंजीकरण करवा सकते है। किसान को अपने आधार कार्ड या भामाशाह की कॉपी, बैंक पासबुक की फोटो कॉपी तथा पटवारी से गिरदावरी दस्तावेज लगाने पड़ते है और पंजीकरण हो जाता है, जिसके बाद किसान के मोबाइल पर ही फसल की खरीदी की तारीख और केन्द्र आ जाता है। जहां जाकर वह अपनी फसल को बेच सकते है और बिकने के 3 दिन बाद ही सारा पैसा किसान के खाते में आ जाता है। इस लॉकडाऊन की वजह से कुछ दिक्कतें ज़रुर हुई है, इस बार लेकिन यदि किसान के पाए वो खरीदी वाला संदेश है तो वो कर्फ्यू में भी मान्य था। किसान अपनी फसल उस संदेश को दिखा कर बेच सकते है।

आगे उन्होंने कहा कि, "यदि फिर भी किसी किसान को कोई समस्या आती है, तो वो सीधा मेरे कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है। 0144-2343398 इस नंबर पर इसके अलावा हर क्रय विक्रय केन्द्र पर सहकारी समिति के जनरल मैनेजर का नंबर लिखा हुआ होता है, वो वहां उस नंबर पर संपर्क कर सकते है। इसके अलावा किसान राज्य स्तरी हैल्प लाईन नंबर 18001806001 पर अपनी समस्या दर्ज करके निदान पा सकते है।"

परेशानी हम सब देख रहे है लेकिन वह कहते है कि चलती का नाम गाड़ी। ज़िंदगी की गाड़ी अब धीरे-धीरे पटरी पर आ रही है। कोरोना वायरस से हम सब लड़ रहे है और अब हमें अपने-अपने काम पर लौटना है, तो सावधानी बहुत ज़रुरी है और सरकार द्वारा बताई गई गाइडलाइन को फोलो करना बहुत ज़रुरी है।